# पांडवो और कौरवों के सेनापती

प्र. 1) किसने किससे कहा।

अ) किंतु अर्जुन की राय मुझे हर दृष्टी से ठीक प्रतीत होती है।
युधिष्ठिर ने अपने सेना से कहा।

आ) युद्ध का संचालन करके अपना ऋण अवश्य चुका दूँगा।
भीष्म ने कौरव सेना से कहा।

इ) भीम और दुर्योधन दोनों ने ही मुझसे गदा-युद्ध सीखा है।
बलराम ने पांडवों से कहा।

ई) पांडव मेरी मदद नहीं चाहते है।
रुक्मी ने दुर्योधन से कहा।

उ) एक जगह सब वीरों को इकट्ठे रहकर लड़ना होगा।
युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा।

ऊ) धर्मराज का उद्देश्य अच्छा ही है।
श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा।

ए) हमने आपके साथ लड़ने का दुःसाहस कर ही लिया।
युधिष्ठिर ने पितामह भीष्म से कहा।

ऐ) मुझे अब संसार से विराग हो गया है।
बलराम ने पांडवों से कहा।

ओ) फिर भी मेरी यही कामना है की जीत तुम्हारी हो।
पितामह भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा।

औ) अतः अच्छा हो कि अगर वह सेनापति बन जाए।
पितामह भीष्म ने कौरवों से कहा।

प्र.2) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

अ) अब प्रश्न उठा कि सेनापति किसे बनाया जाए?

आ) कर्ण, तुम लोगों का बहुत ही प्यारा है।

इ) फलतः कर्ण तब तक के लिए युद्ध से विरत रहा।

ई) दोनों ही मेरे शिष्य हैं।

उ) इस कारण में आपकी सहायता लेने आया हूँ।

ऊ) कुरुक्षेत्र के मैदान में दोनों तरफ की सेनाएँ लड़ने को तैयार खड़ी थी।

ए) यह कहकर दुर्योधन ने भी रुक्मी की सहायता ठुकरा दी।

ऐ) धर्मराज का उद्देश्य अच्छा ही है।

ओ) विवश होकर मुझे तुम्हारे विपक्ष में रहना पड़ रहा है।

औ) भीष्म के नेतृत्व में कौरव-वीरों ने दस दिनों तक युद्ध किया।

प्र.3) दिए गए शब्दोंके अर्थ लिखें।

अ) सुसज्जित- तैयार किया गया।

आ) नायक- राह दिखाने वाला।

इ) उद्दंड- मनमानी आचरण करने वाला।

ई) अचंभा- आश्चर्य होना।

उ) दुःसाहस- अनुचित साहस।

ऊ) संचालन- परिचालन

ए) महारथी- बड़े योद्धा।

ऐ) खटकना- बुरा लगना।

ओ) युद्ध नीति- सेना को टुकड़ों में विभाजित करना।

औ) परिक्रमा- चारों ओर श्रद्धाभाव से चलना